



श्रीशंकराचार्य

257

PAGES

५२५

उत्तमश्रीलोकनाथाय ॥ लोकेश्वरलोकना
थलोकलोकगुरुगुरु ॥ लोकपुर्जलोकवन्दे
लोकान्तरगतनमः ॥ १ ॥ लोकेश्वरनामलोकया
इश्वरमालिकलोकनीथानामलोकयानाथ
लोकालोकगुरुगुरुनामसकललोकैयागुरुलोक
कवन्देनामसकललोकनमः सकारलयाकवी
अपाकल्लोकपुर्जनानामलोकपुजायाकवीज्याक
ल्लोकान्तरगतनाममनुष्मलोकदुजेजुयावी
ज्याकल्लोलपोलपञ्चपानीकरुनामयातजी
ननमसकार ॥ १ ॥ करुनामयेकारुनीककार्जिसि
वीकरकराकामुनाधीकदेवततोस्मीकरु
नाकरी ॥ २ ॥ करुनामयेकरुनावानजुयासीपरतु
कार्जिसिधीयानाईद्वयायानागुसिकमअपा

कृतपिपावीज्याकर्मपप्रपानीकरुनामयेया
तजीर्ननतोमोनामजीननमसकार॥२॥ना
नाभयहरनामरूपभेदतम॥नानायोगी
समुद्रपेनलोकरयसाकरितम॥३॥नानामा
मअनेकअनेकजीनीसजनमजुयादुयसि
याचोपिप्रानीगनपितअनेकअनेकरूपना
मयाभेदअनेकअनेकभयहरनयानालोक
रक्षायानाविज्याकर्मपप्रपानीकरुनामये
यातजीर्ननतोमोनामनमसकार॥३॥थायाति
व्यातभुवनतीसीतीतप्रयेययत॥कृत
मुधरनयननतोममिधाननायकम॥४॥
थायागुभुवनअथवाअथवाभुवन
वीकर्मलोकरपितउयारयानाथेहोअक

नीलभुवनेद्योयावीज्याकर्मप्रपानीकरुनामयेया
कर्मपप्रपानीकरुनामयेयातजीर्ननमसकार
॥४॥यथायथाचवडनेयामदिल्लामत्पा
मतथातथा॥प्रादिल्लधर्मतुरितमेभीगुरुन
मो॥५॥मतेप्राणिगनपीसिगथेगथेअठवा
गुल्लगुल्लइथरभजनायातथुमितभूय
थरथरअथवागुल्लगुल्लमंतुजुयातुल्लम
दुगुधर्मकथाकरुनायानाविज्याकर्म
थुमगुरुकरुनामयेयातजीर्ननमसकार॥५॥
नमोरनश्रयायेतीयेपठतीसुसुरधयासा
यावतीप्रयवेद॥तमागीनीतीदायकम॥
६॥नमोरनश्रीयामेधकागुल्लमनुय
सद्योतयावोनाचनीथुममनुययात

मोते सुखावति भुवने द्वौ गारुध्नाथानां वि
 श्वाकर्षणं गुरु कुरु नाम ये यात जीन नमसं काराहा
 माहाकार नीकं मंडलं माहांगुर्ह मोहमाया
 गहरै ॥ माया सुभ्रगुर्ह नमो ॥ ७ ॥ माहाकरु
 ना वानजुया सुमेरु मंडले विज्या कल्ल माहा
 गुरु मोह माया गहर नया ना विज्या कल्ल मा
 या सुभ्रगुर्ह यात जीन नमसं कारा ॥ ७ ॥ सप
 तां धरमी देह त्रौ त्रौ परितो भवती तो नरा ॥
 पंचाननं सुरये नी ~~रु~~ क्रा सुखा वात प्रयेत
 ॥ ८ ॥ धौ धौ ग आय या रु त्रौ न करु नाम ये
 या गुरो र क स राजा नी गु सु म नु स्या भ गती
 तया थु गुरु त्रौ न बो नी थौ त पंचाननं च जे धा
 ये पंचमा हा पाप ना स नु या सुखावति थु

वने कमेद इव ताटा इति श्री वीर क स वश
 ने कृति वीर क स राजा कृति श्री लो क्य भर र्हा
 व स मा प र्हा ॥ ॥ १ ॥ नमः श्री आर्या कलो
 कि ते च ए प ॥ ॥ २ ॥ देव मनुष्या सु न त च
 र्हा नं प्र वि ह त न म न ए स न म र्हा ॥ ॥ ३ ॥ लो के स
 त्व मा म स र्हा र्हा क क पालो क द क द र्हा ॥
 ॥ ४ ॥ स र्हा र्हा द धि म ध्या नि म र्हा के स मः
 हो मि ति मा हि त म र्हा ॥ मा म र्हा धि र्हा मां
 वि ह त तं न्ना हि म हा क प नो मि न व र्हा ॥ ५ ॥
 नृ क्षा ति मी र्हा प द त ने र्हा न म हा भ प
 वि ह त न्ना र्हा ॥ पाल प भ ग व र्हा क मां
 पाल द वी ची यामि न वि प्र मी ॥ ६ ॥ कृ त म
 न्मा त्री म र्हा ए म ज स र्हा म र्हा न प्रा मि स

॥ श्रीगणेशाय नमो ॥ श्रीनीत्येनाथ नमो ॥
॥ राग भजन ॥ जंभे जये जये नारायण परं
ब्रह्म पुरुषोत्तम विश्वयात्म विश्वरूपपालन
करता ॥ ६ ॥ आसनसे यताग नाभिकम
लजलेसे कमल मध्यप्रलसंरूप वेद पठत
तादरुय लयचोरासि जिव जगत्त्रिंशे
करता ॥ १ ॥ भग्नकारण रूपलेत अचल
भारुके मध्यकक्ष शुक ररूप असुरमार
नफे ॥ जगतकारण पृथ्वि डत्त डपर धरता
॥ २ ॥ अधोरूप ललित जिपरवम्भ फोरप्र
कत भये बालिके द्वार जात वेड पठत मधु
रकरके ॥ भारतपालत तुला कलेक पतिक

रता ॥ ३ ॥ निक्षत्रु किये परसुगाम् बहु द
 हाटगजाये राम चन्द्र प्रकत भयो पिथी
 भारहरके ॥ अभये देतो राम राम राजेक
 रता ॥ ४ ॥ वन्याम् विरूप हंस बुद्ध मुद्ध
 रूप पूर्ण ब्रह्म ह्म अरूप कलिक कर्म
 रूप ॥ असवार होय क मङ्गल के देन
 करता ॥ ५ ॥ जानि मुनि भाव करता हृदय कम
 न मध्ये रूप गुणाति न पर ब्रह्म परमानन्द रूप
 ॥ जपत श्रीराम बहादुर मुक्ति करता ॥ ६ ॥
 इति सप्तमं ॥ १८ ॥ पमावैसाय ॥ गते १ शुभ

राज ॥ धन्दे जवानि कालिका तुमहि मुक्ती
 दाहि निका सकल जोफ पालिका दुख हर
 निमालिका ॥ ७ ॥ सकल जिव मालिका
 जपति सरि लिनिका दुख सिरि दीरिका
 सरन तेरि कालिका ॥ ८ ॥ रत सिद्धासन
 राजिका सिव सहित मालिका कुलाकू
 ल धरनिका वन्दे चरी कालिका ॥ ९ ॥ मत्त
 मरान धारिका नर मुद्ध मालिका नेत्र
 सहित धारिका अगम देतो कालिका ॥ १० ॥
 अर्जे दास गोपाल का जान चरी तेरि
 स्वरूप सीत वलका हृदय जान दाइका

राग भक्तुति ॥ ति र्धसारवागद्वारमुक्तिका
रवागमति सर्वसीद्धिनि सरश्चति ॥ ध्रु ॥
मङ्गमकरगायति समस्तलोकतारिनि
पुरुषकाक्ष्यभयदानदेतो देवशीत
धरे ॥ १ ॥ वामाग्रिहरनी अलि विक्रमाफ
॥ २ ॥ लोरेजेष्टुदिनेति रचतर्जनीतमध
वागमति सडावन ॥ ३ ॥

राग जुगलपिठताल
अयेगरीश गगनाथदयानिधिसकल
विघनकर दूरहमार ॥ जये ॥ प्रथमधरे
जो ध्यातनुमारे तिसपुर साकल्यसार

॥ १ ॥ लोरेजेष्टुदिनेति रचतर्जनीतमध
वागमति सडावन ॥ ३ ॥
ल परशुवर धारे ॥ २ ॥ जयेनाशुद्धि
सिद्धिदोऊचमार कुलावे मुखकवाहन
परमसुधार ॥ ३ ॥ जयेनावृक्षादिकसुर
ध्यातमनम ऊविमुरिगारा सवदासु
तुमारे ॥ ४ ॥ जयेनावृक्षानंदसहायकुरा
नित भक्तजनोके तुमरवधार ॥ ५ ॥ जये
रागजंगलताल ॥ जयेजगदीश्वर मान
सरस्वति हारणागत प्रतिपालनहारि
॥ ध्रु ॥ चंद्रविषमवदनविराजे हिास
मुकुटमालागिस्तधारि ॥ ६ ॥ जयसर
विनावाम अंगमेहो भेसाभगीत ध्व

निम धुरपियारि ॥२॥ श्वेतवसन कमलास
 न सुंदर संग सखि हंस सवारि ॥३॥ ब्रह्मा
 नंददास तु भारि दे दरशान् यर वल्लदुलारि ॥४॥
 जये कमल कमलासन सुंदरि सकल जगत
 माता सुप्रदाई ॥५॥ भूतन मुकुत मस्तक
 यर राजे वनमाला गलविचमुह ॥६॥
 फानन मे वै दल कर कंकरा पगन यर सा
 भा अधिकारि ॥७॥ गरुड चडि हरि सा
 विराजे श्रवणागत न सज विछाई ॥८॥
 ब्रह्मानंद कर जो सुमरणा सुख संपत नित
 होत सवार ॥९॥

जये दुर्गे दुर्गति परिहारिणी सुभविदा
 रिणी सु भवानि ॥१०॥ आदि शक्ति पर
 वक्षस्वरूपिणी जगजनीति चहुं वेद
 वधानि ॥११॥ ब्रह्मा श्रीवहारि अर्चन किनो
 ध्यान धरत सुरनर मुनि जानि ॥१२॥ अष्ट
 भुजा कर रवहु विराजे सिंह सवार सकल
 वरदानि ॥१३॥ रत्नमाला शरण मे आया
 भव भयनाश कर महराति ॥१४॥ जये
 आज्ञाधिपत गुरु द्वर आयो मे मन आनंद
 भयोरि ॥१५॥ दशान मे सब पाप विनाश
 दुख जरि द्रसव दूर गयोरि ॥१६॥ अमृत विचून
 सुतल मना हया द्यत भीतर प्रभु पायल्यो
 रि ॥१७॥

जन्म जन्म के सीधे दूटे भव भयो ताप मिताये
 दयोरे ब्रह्मानन्द दास दास को बरग कमल
 लिपटावर ह्योरे ॥४॥ वरजरीहि सेवन धिय
 अनसे जान कहि मन मुख मेरे ॥५॥ जन्म
 जन्म के वैरि तोरे चोरा लिखत फेर न फेरि ॥६॥
 यह मीठे फल जहर भरे सुख थोड़ा भरु वि
 पत धनेरी ॥७॥ भृगु तू व्याज न देख लुभाये
 प्यास मिटे कबहुं नही तोरे ॥८॥ ब्रह्मानन्द
 संग तन मन को पावमा अलगे नही देरि ॥९॥
 चेतन देव की सेव करी नर जन्म जन्म सफल
 हो जाये तुमारी ॥१०॥ द्रष्ट द्रष्ट पुरसाय

कहि नर जन्म देता भाव सब दुर निवारो ॥११॥
 हिरदे अंदर मीदर मोहि जगु मग जोत
 जेबो उजियारे ॥१२॥ प्रेम पुच्छ से पूजन किज
 मन दिय फल धर ध्यान विचारो ब्रह्मानन्द
 उलट सुरागि को कर दरसन भव वैधन दारा ॥१३॥
 रक्षर तुं हे दयालु दुख दूर कर हमारा तेरि सारा
 मे भाया प्रभु दीजिये सहारा ॥१४॥ तुं हे पि
 ता वा माता सब विध का विधाता तुझ सा नीहि
 हे दाता तेरा सबीय सारा ॥१५॥ भूमि आफास
 तोरे रवि चंद्रा संधु भोरे तेरे हुकुम मे सारे
 लपका तुं हि अधारा जग चक्रम चूड़ा है भव
 रक्ष धर्म पडा है दरिय तेरे खडा है भवद मुखा

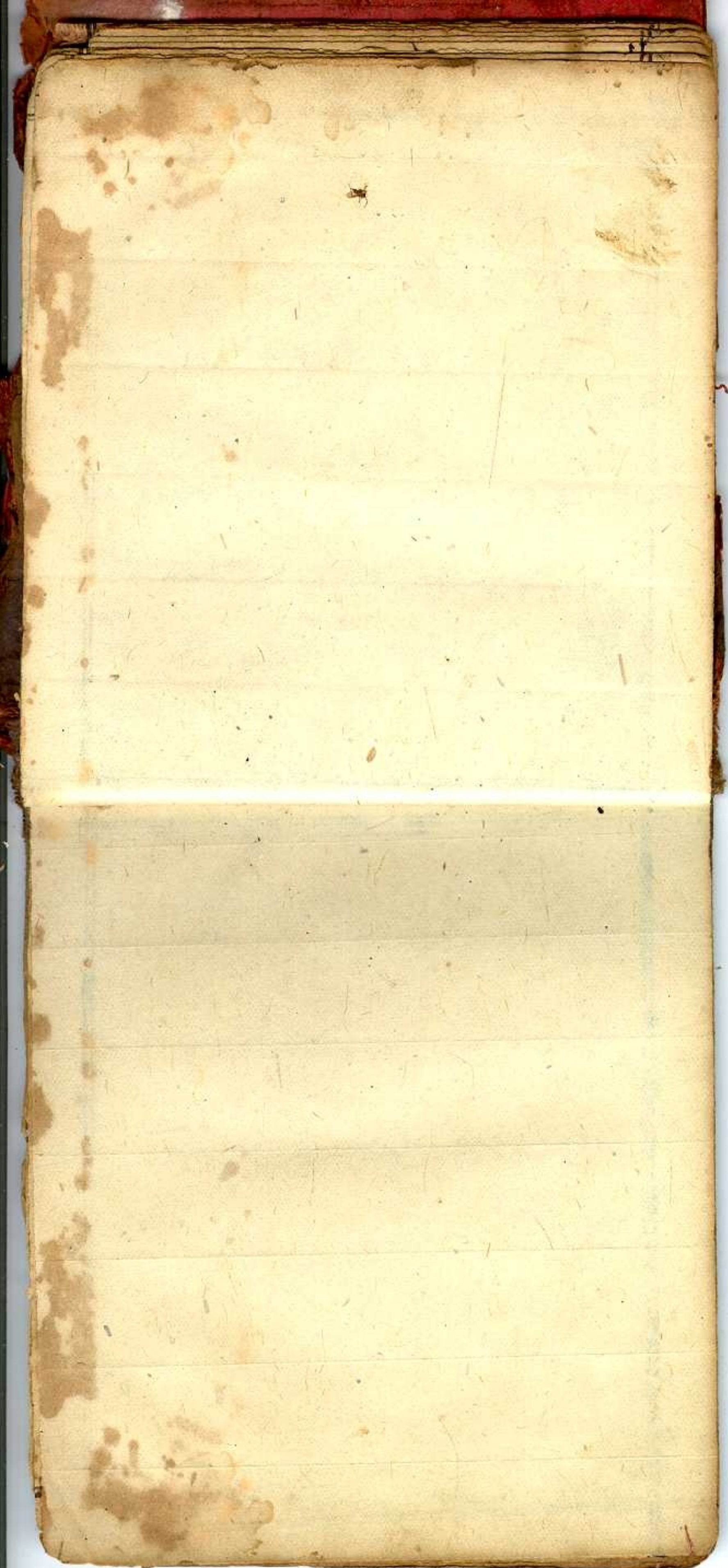
विदाह ॥३॥ अपानसरनेमे लिगे सब देख
करके जे ब्रह्मार्त द दानहिजे नृक्षनाननिधि
कार ॥४॥ रागविहारताव
भ्राह्मण कहै सुन अर्जुन बारहमारि तुम
को समझाउ ब्रह्माज्ञान निविधारी ॥ यह
चेतन जीव वसेनित तनू के माहो जिमराजा
नगरी पीच निवास करार दसु रक्षित अह
मन सेव कहै सुम दारि सब प्राण वृद्ध दरवान
करे निगारि अंदर बेठा नित देखे रचना
साहि ॥१॥ यह पाव भुकावना शारि तुमरा
क्षन भै गुर है गठरूम विनासन हारु वा
लापराजोवन जरा सारि विकारा याम

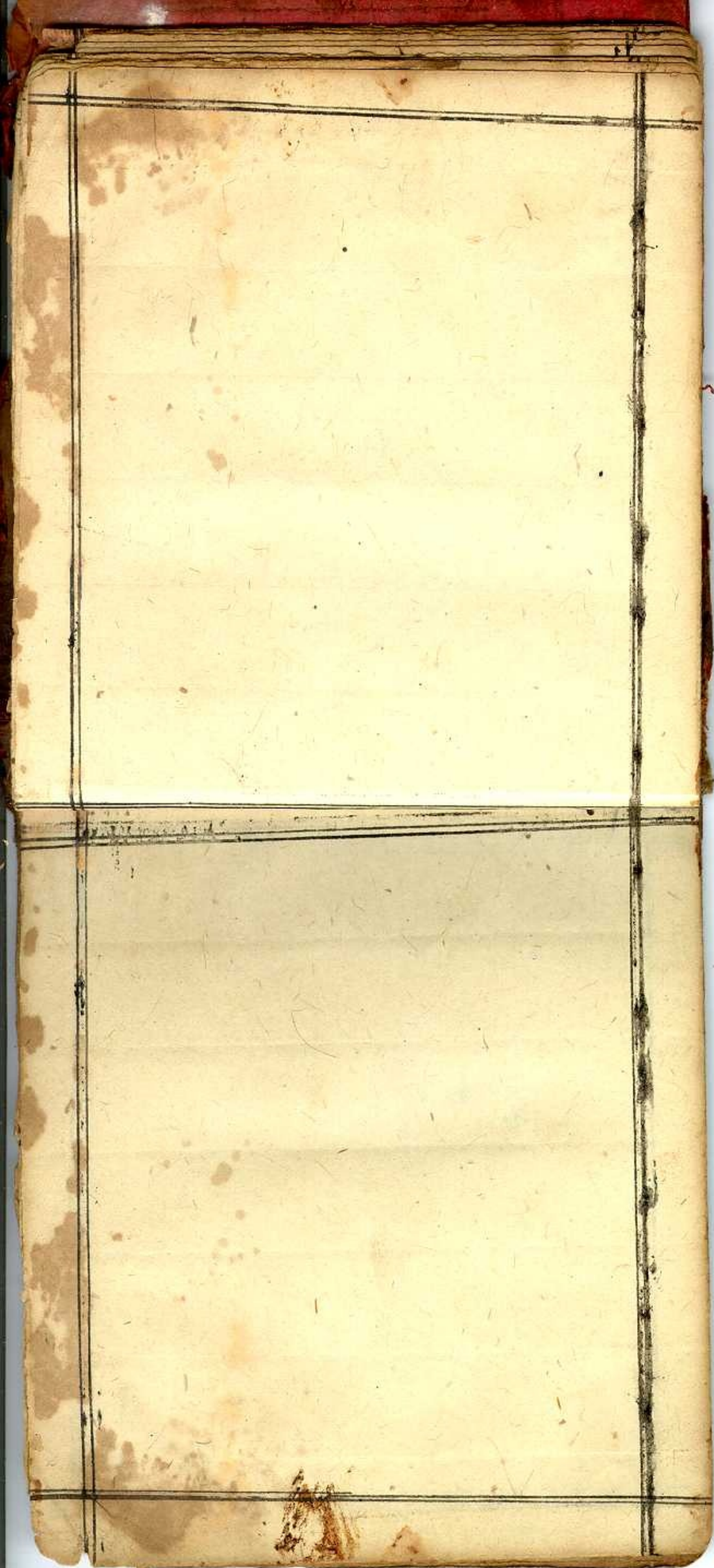
माहि है जीव रह नित नपारा कर जुं देह अ
रु जीव तु देख विचारा ॥२॥ जिस पीछे लोभ
कर धिंजर माहि फसाया तिमजिव कर्म वहा
धारन कीतिकाया विययो कित्ना लच दे अ
फिरे भरमाया अयने सुख चेतन सत्य रूप
विस्मराया भव वधन विचपुडा विन जात
अनारि ॥३॥ जिम वरत्र पुरारो छानय
नर धोर तिमजिम य कर्म दू जो देहा सु
धीरा मरणा जत ना है देह धर्म सुन ध्यार
अचरा मर चेतन जीव मरे नाहि मार यह
अविता शि अचल रूप अविकारि ॥४॥

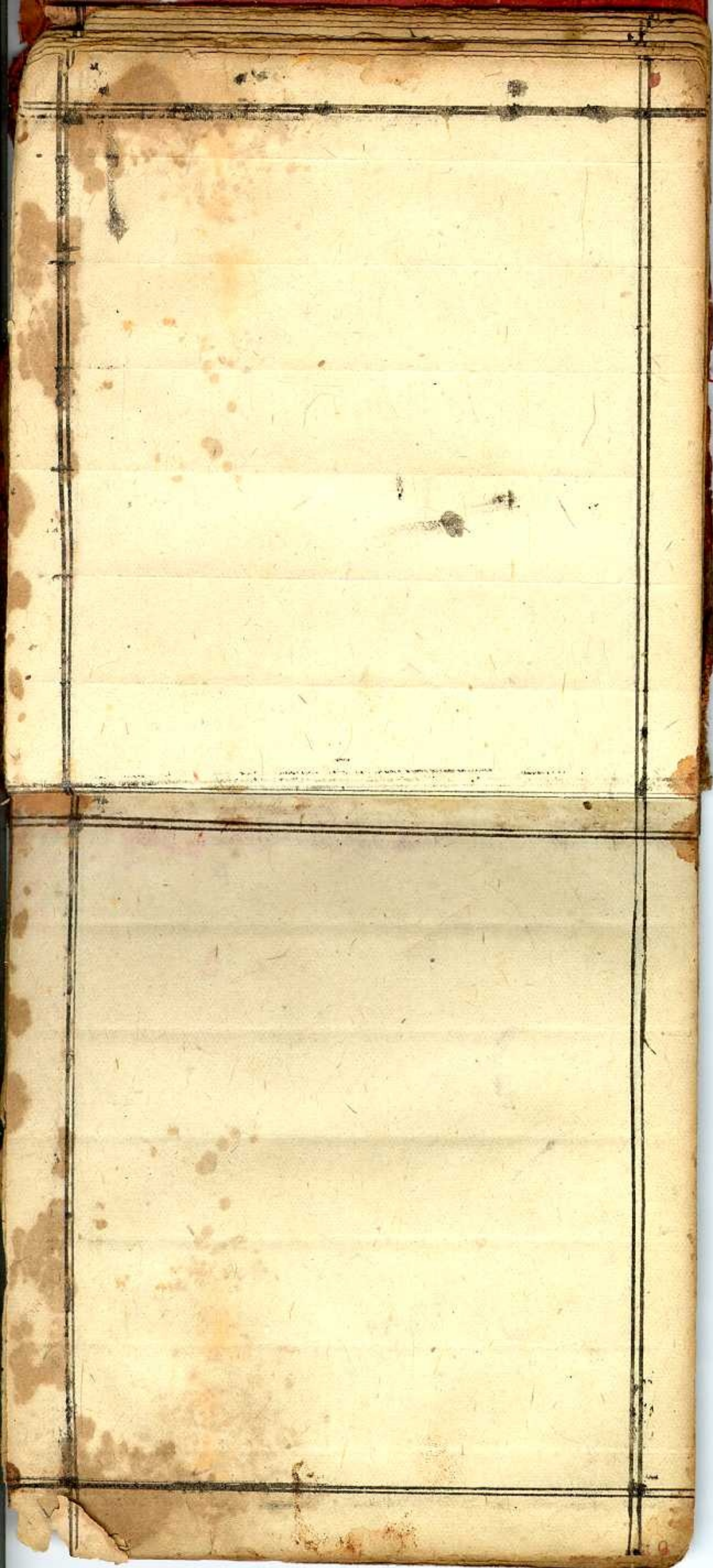
सपाजीव अंसमरेनिश्चय कजानो धर्यत
मे यकस्वरूप मुझपह चानो गो कूकर
ब्राह्मणाश्वपच भेदनीह आनो सपके सुख
दुखको अपने समकरमानो तज कारको
ध अरु लोभ मोह दुखकारि ॥५॥ मुझ
को सब जिववरापर हे देवनमें पर भजे
जो मुझको भर्जु तिने मे मतमे यह वाट
सापेहे सुता कहु अर्जुनामें मुझ भक्तपे
नीह फेर जन्मव धर्ममें निसादिन मतमे
मुझे परम भक्तिकर प्यारी ॥६॥

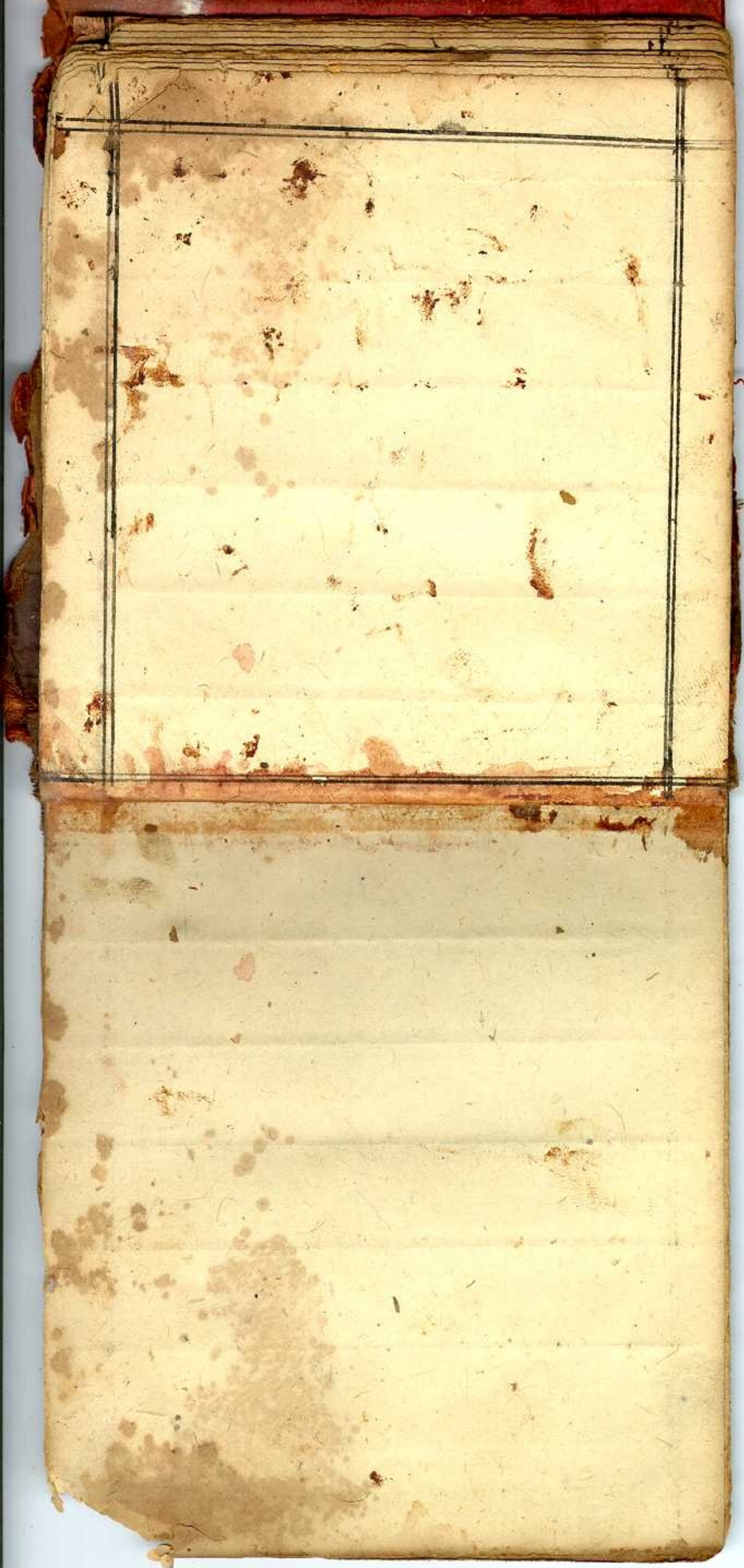
परमेश्वर पुरावद्ध जगत उपजीवि मायाच
क्रमे जीव चडाया फिरावे युगवितरायो
वे अंत अंत नीह आवे जो दुसकी जीवशान
मोक्षपदपावे कर भजन शका मिटे स
कल भये भारि ॥७॥ सबसार ज्ञानका
मुन अर्जुना अवप्यारा मम शरणा प्रडा
नित और धर्म तजसारा में सब पापोंको
मेठकरुं भवपारा मतकरो जरा तुम मतमे
मोच विचारानु ब्रह्मानंद स्वरूप सदा मन धारिय

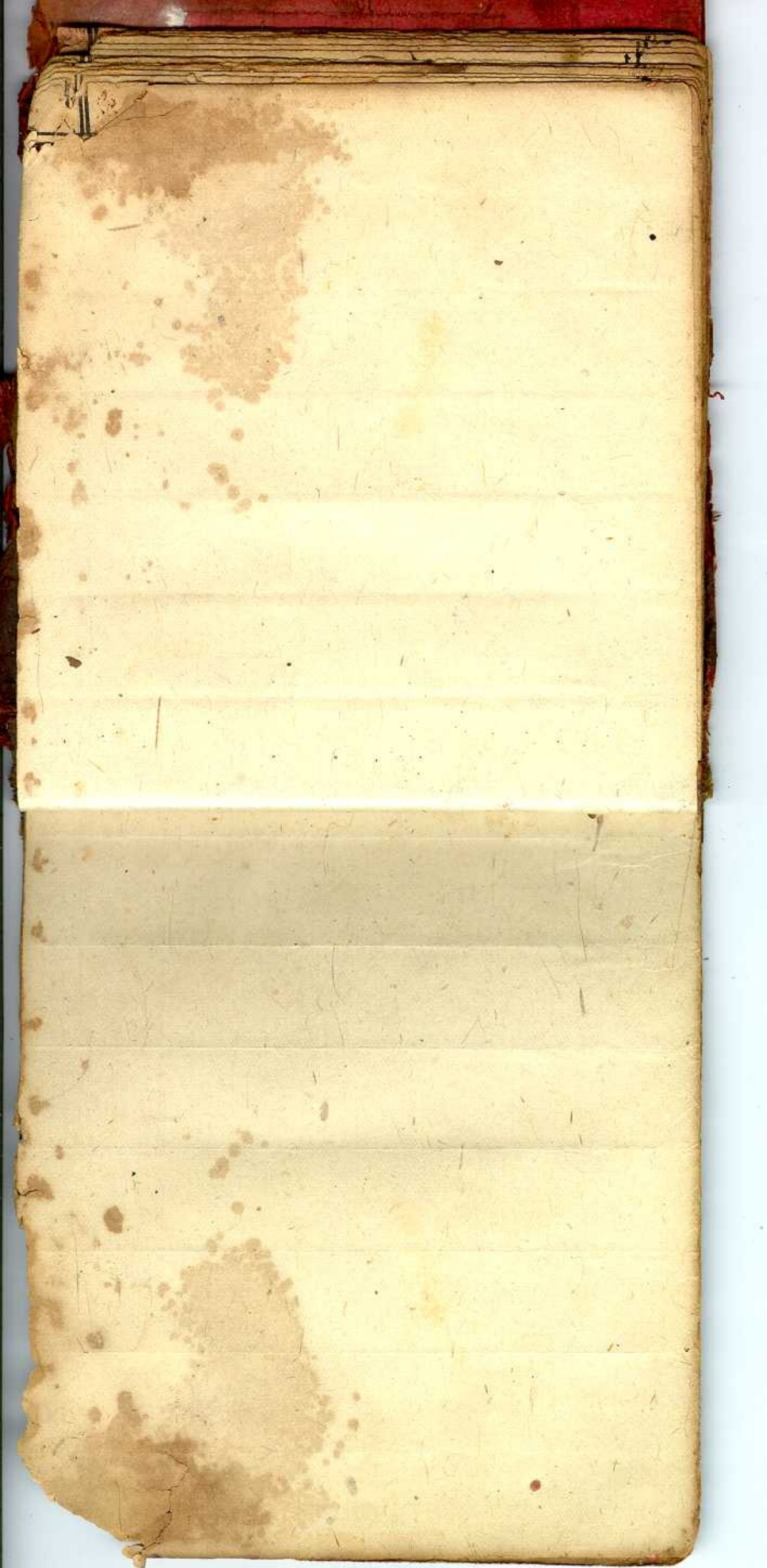
ॐ नमः त्वं कालि त्वं च तारा त्वमसि गीरि सुता
 सुन्दरी रभैरवित्वं त्वं दुर्गा द्वि न्नमस्मा त्व
 मसि च भुवना त्वो ह्यन दमो शिवा त्वं ॥ धू
 मा मार्तण्डा नि त्वं मसी च वगला मंग ला
 दिस्तवाक्षे क्षन्त वामे ऽपराधः प्रकटि
 तव दने काम रुये क राले ॥ ॐ नमः पूर्णा च
 राडी नमस्ते तु वाला ना को धरणी परिण ॥
 ॐ लोके जनि देवि सिद्धी लक्ष्मी नमः
 ते ॥ १ ॥

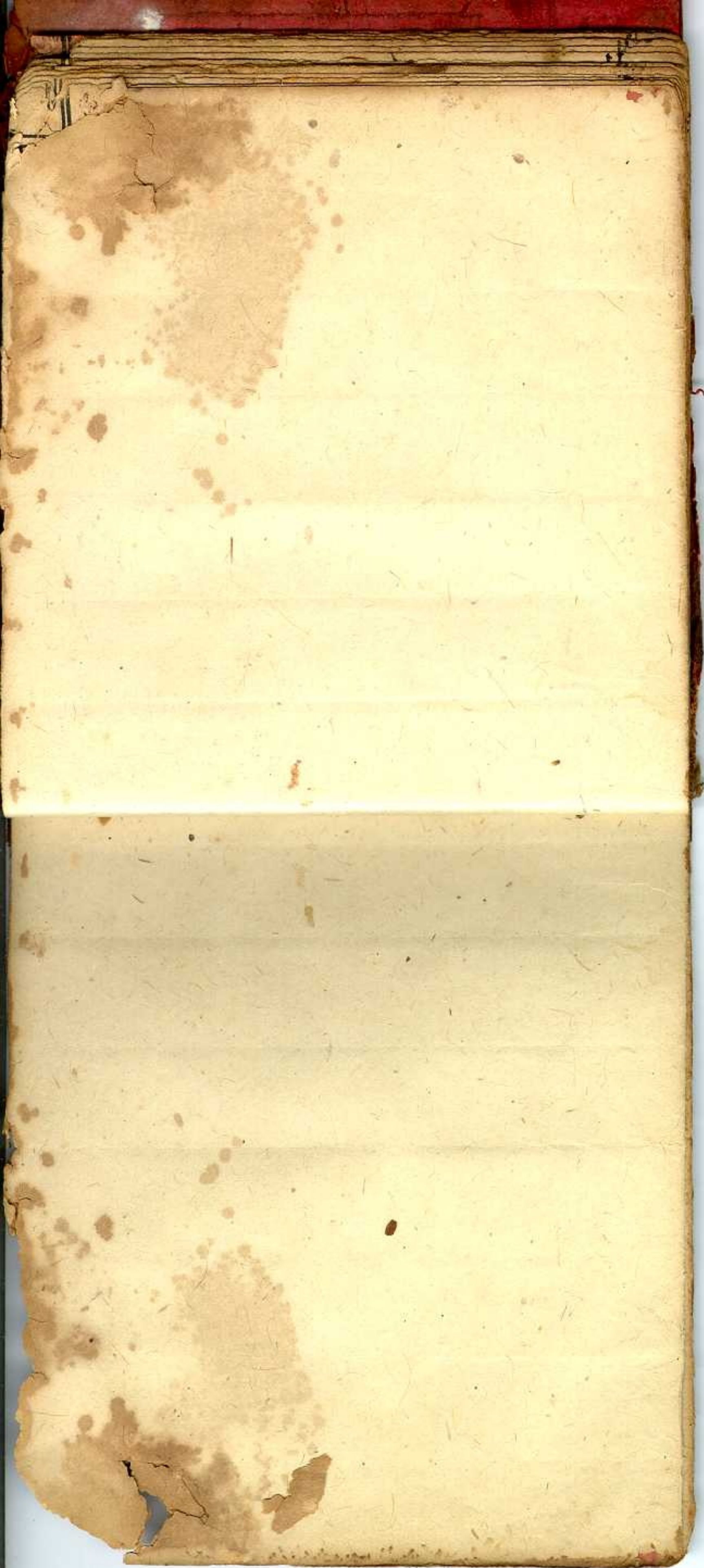


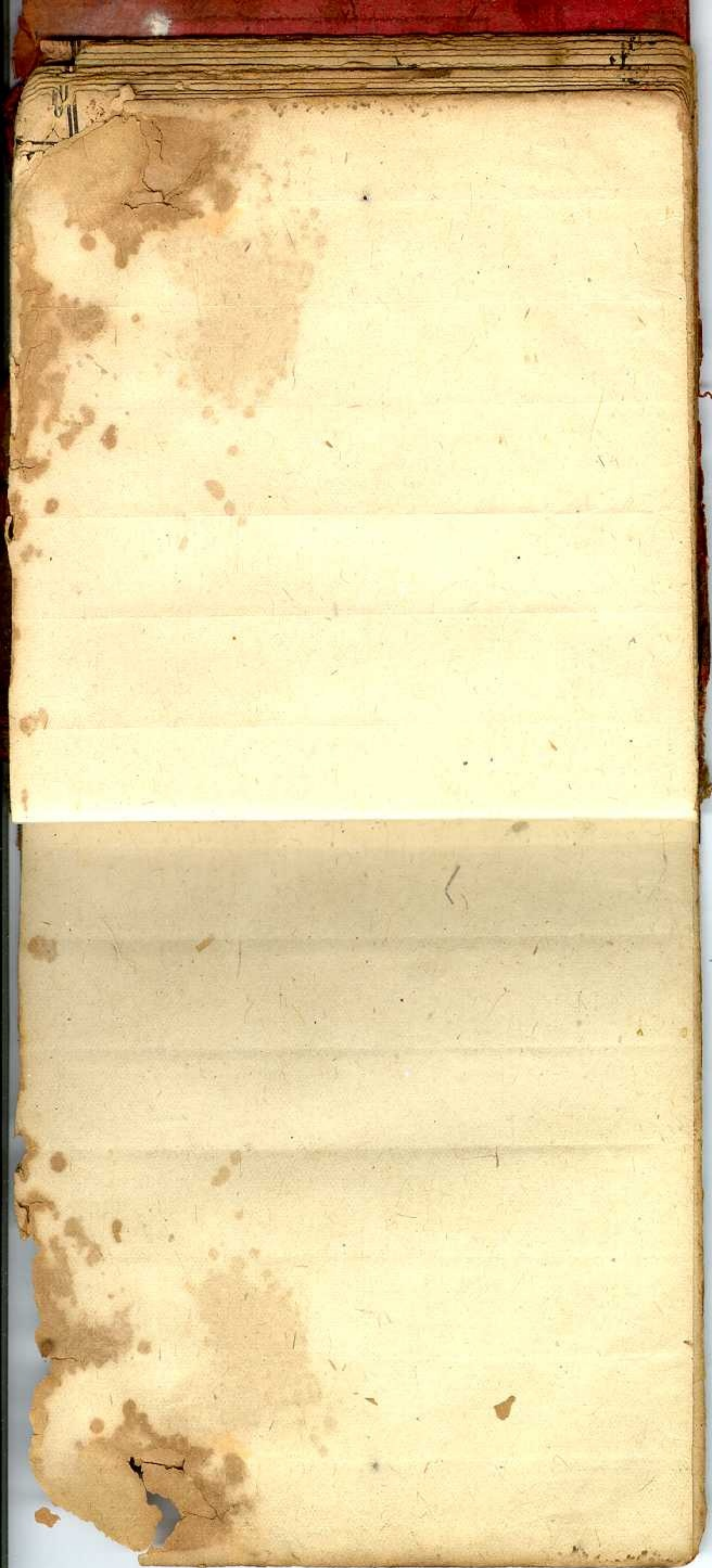


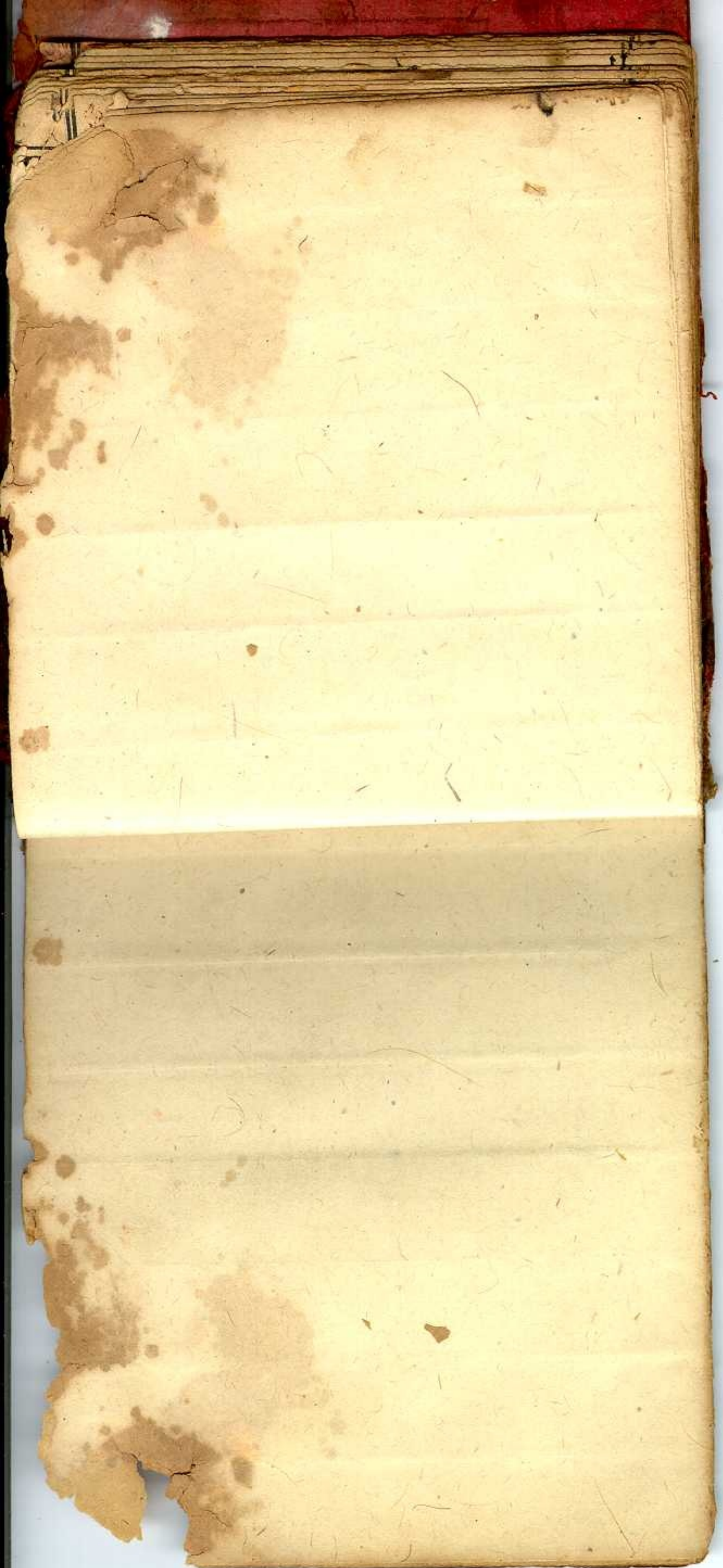


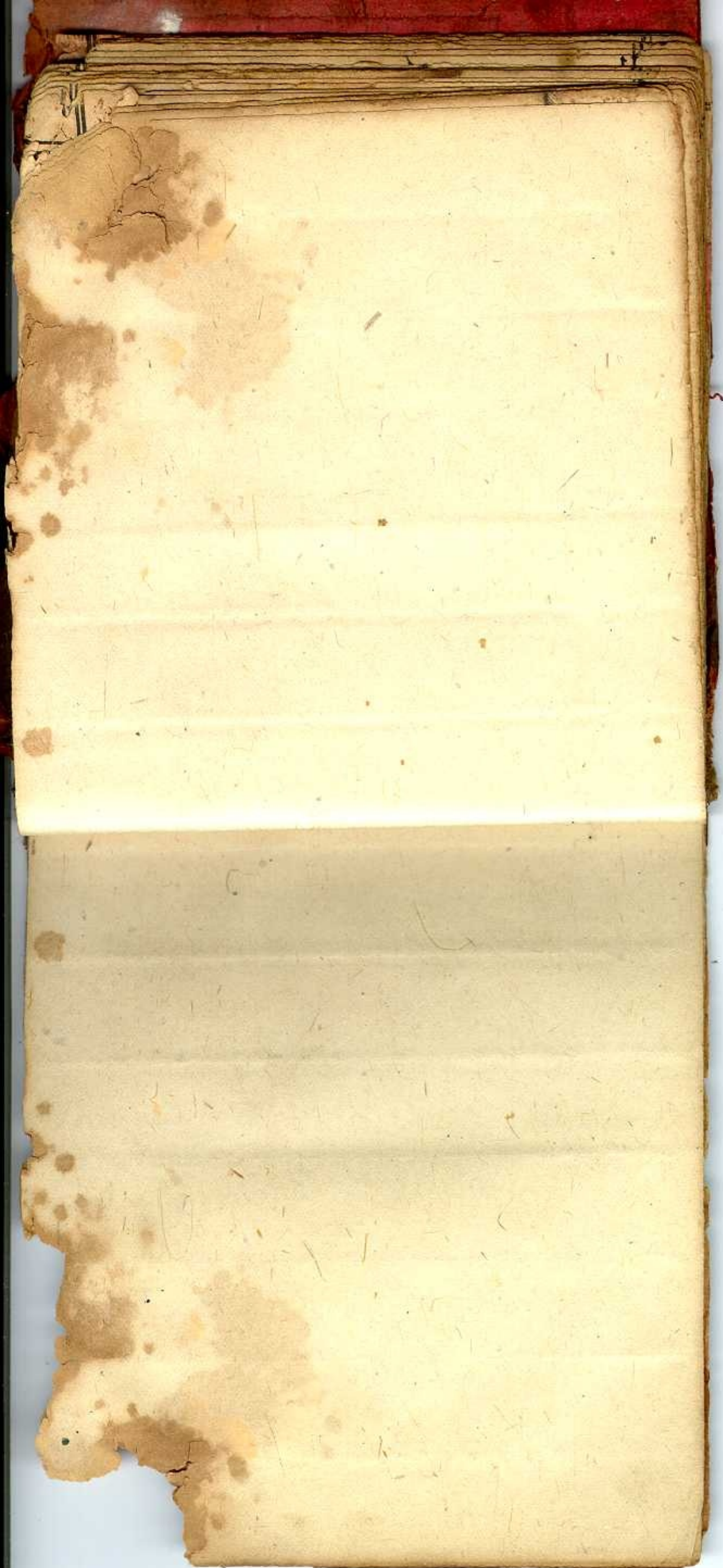


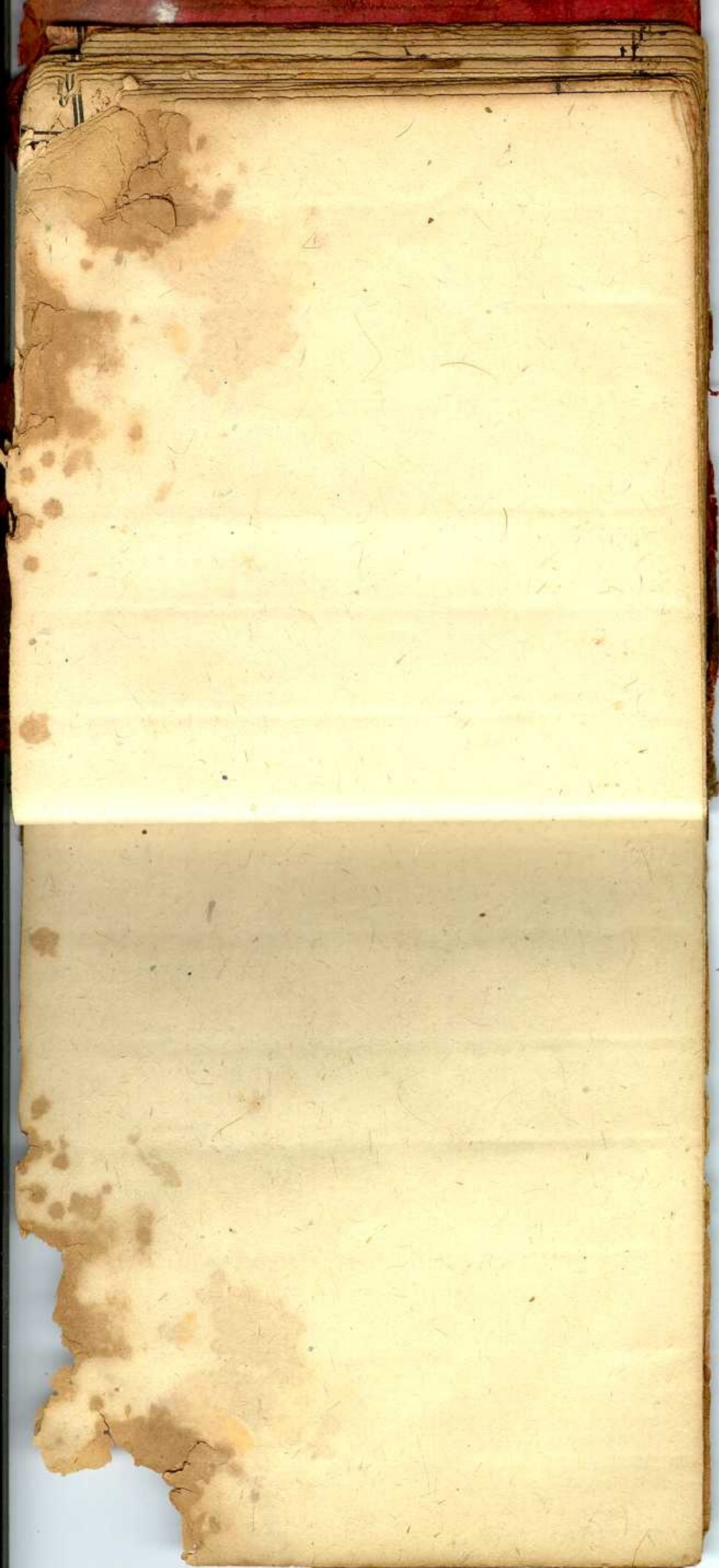


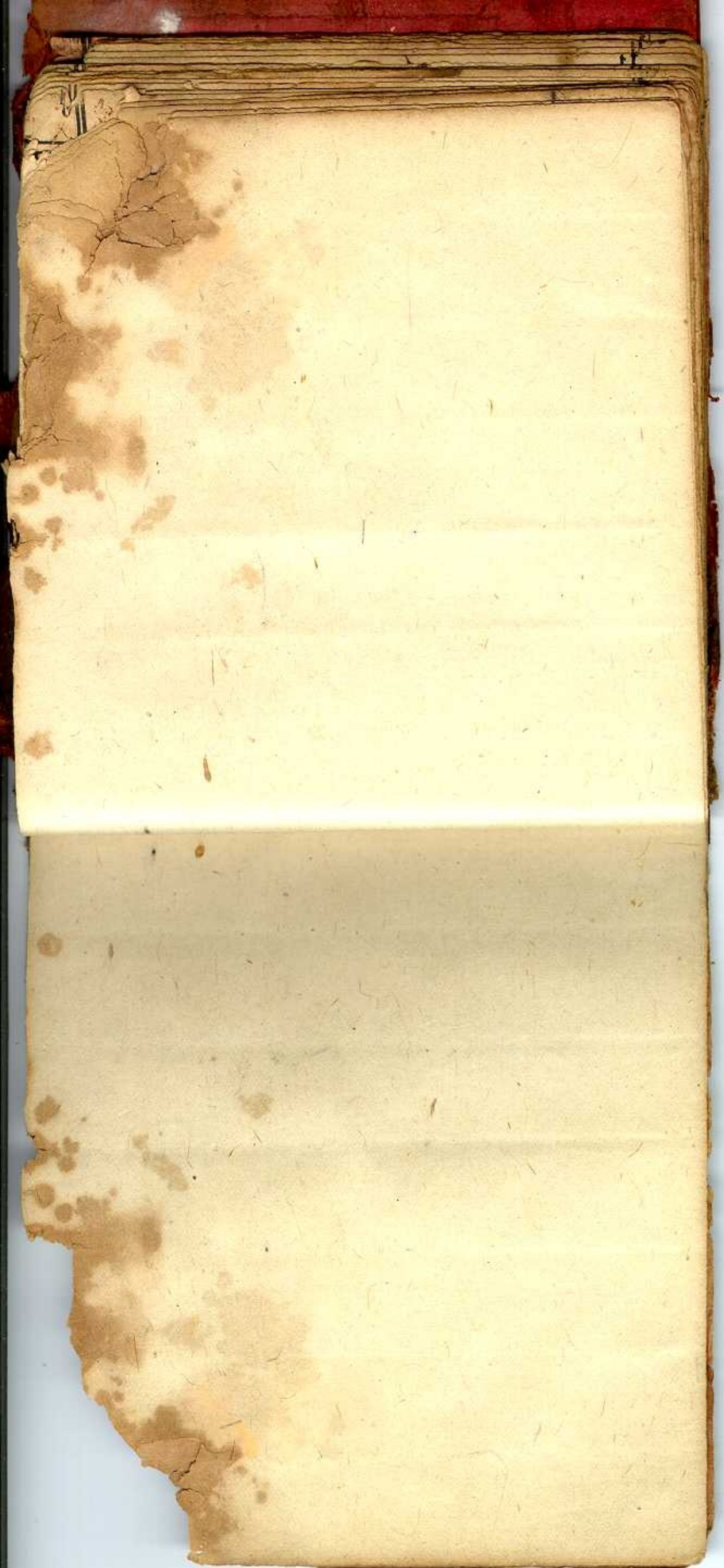


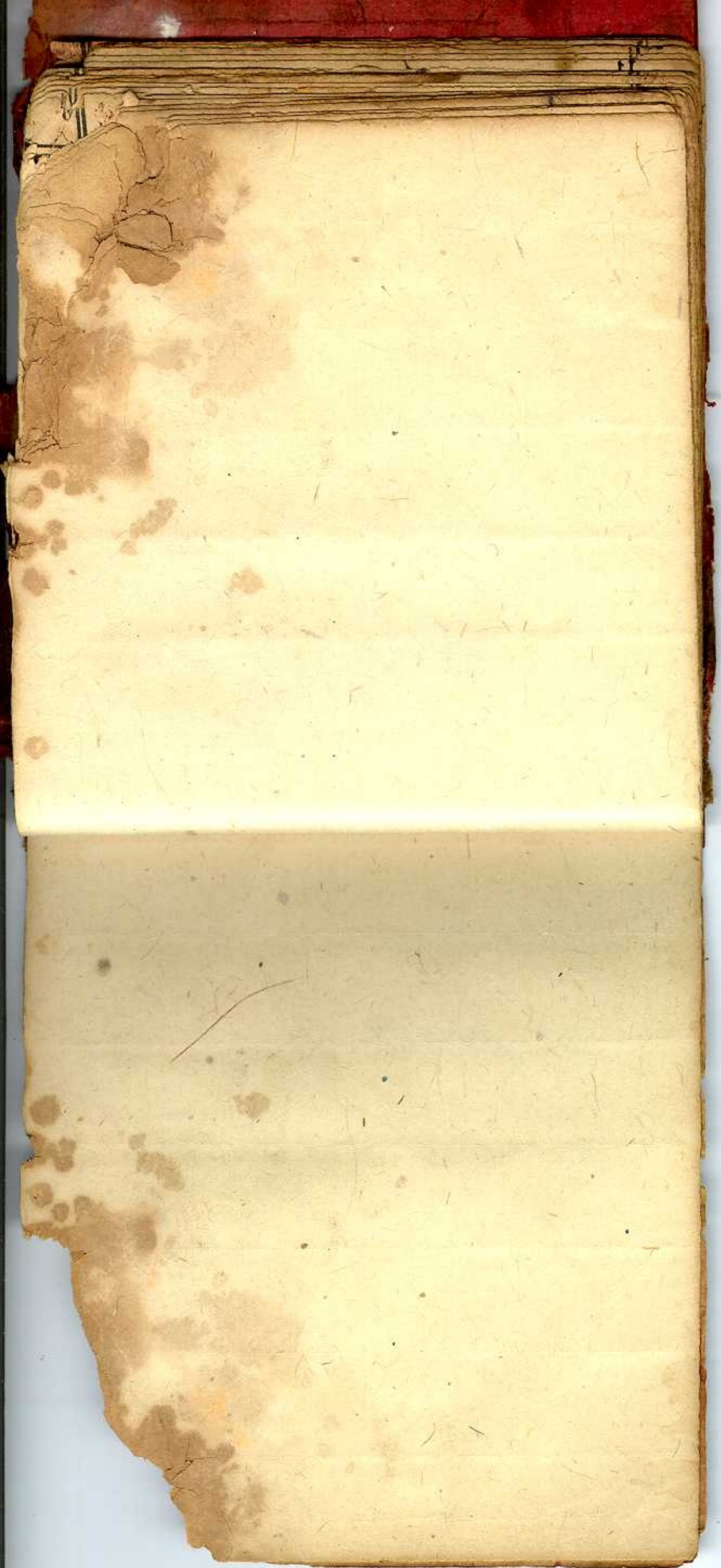


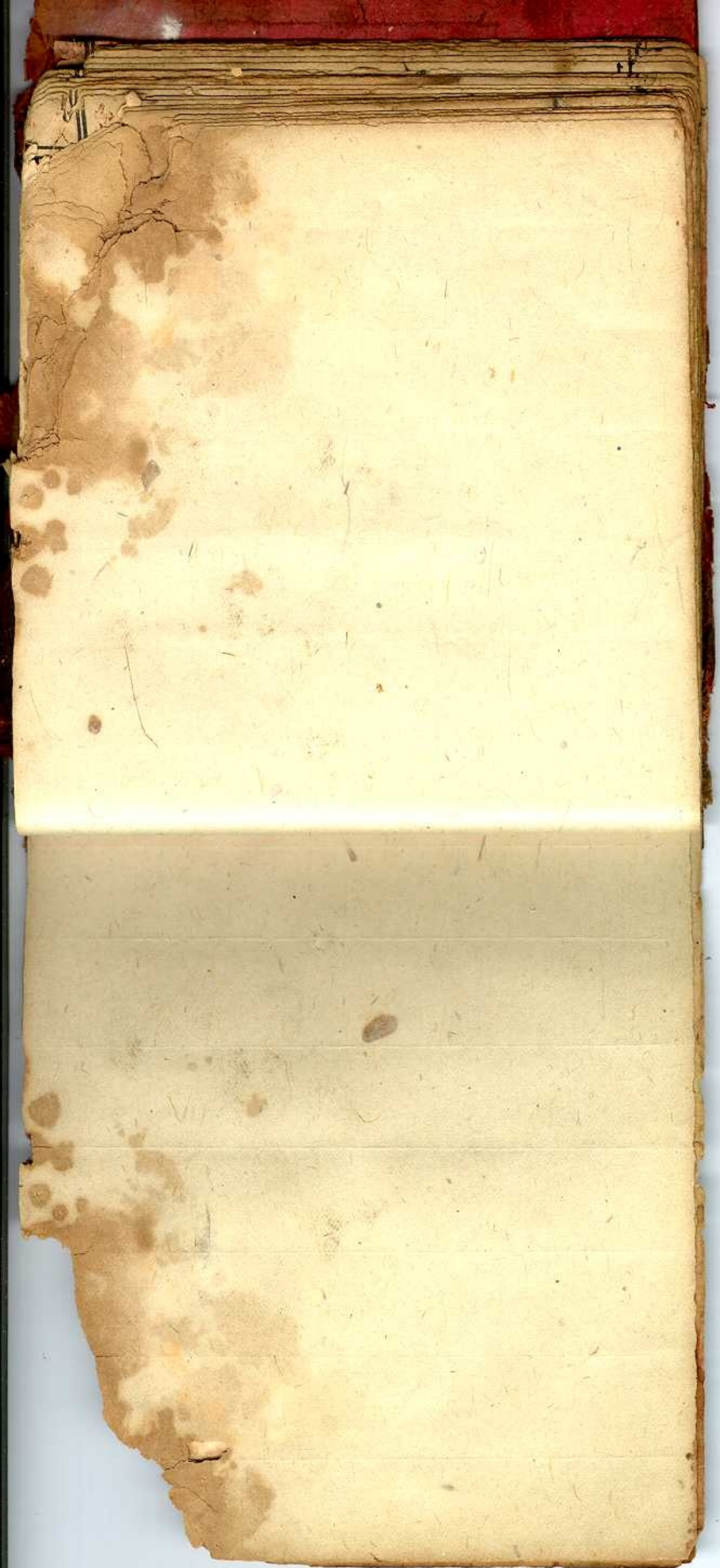


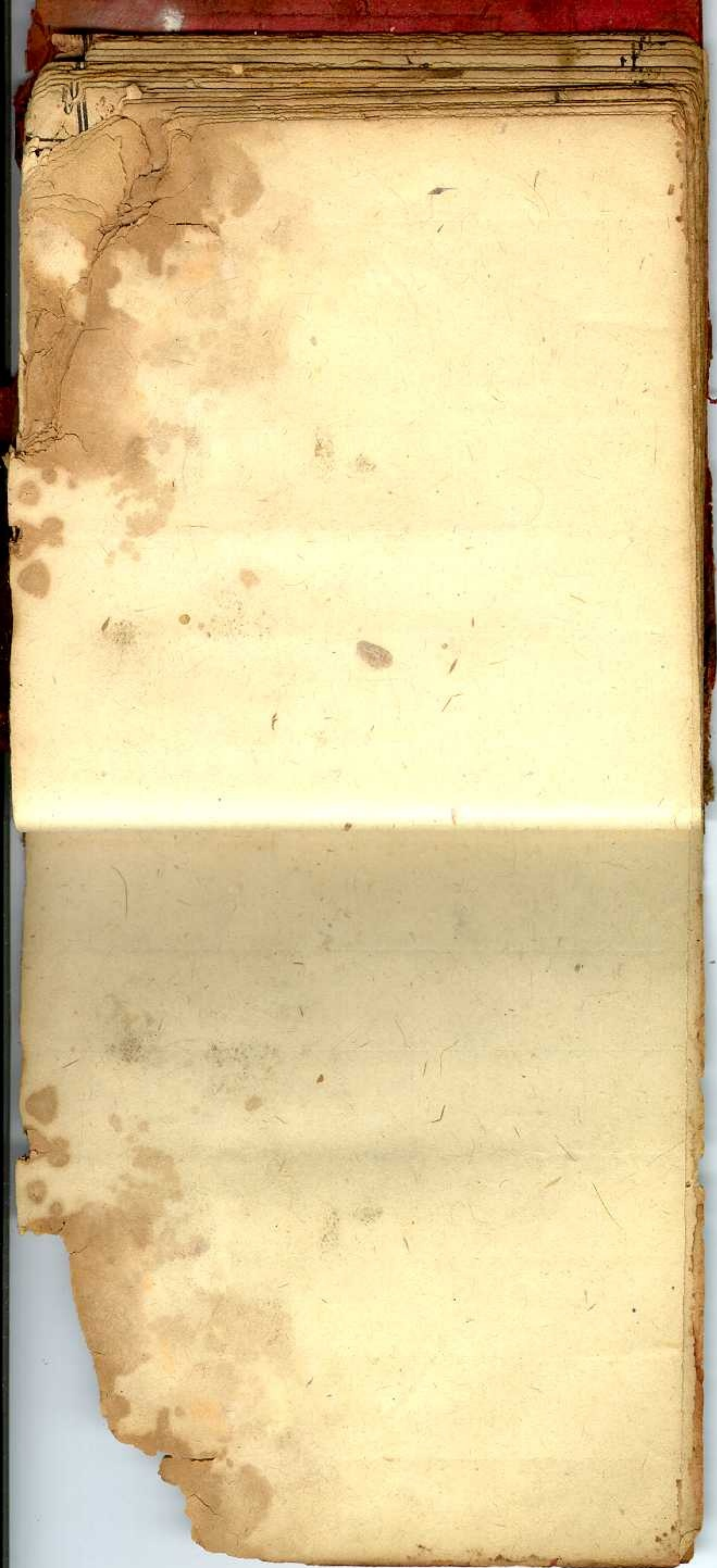


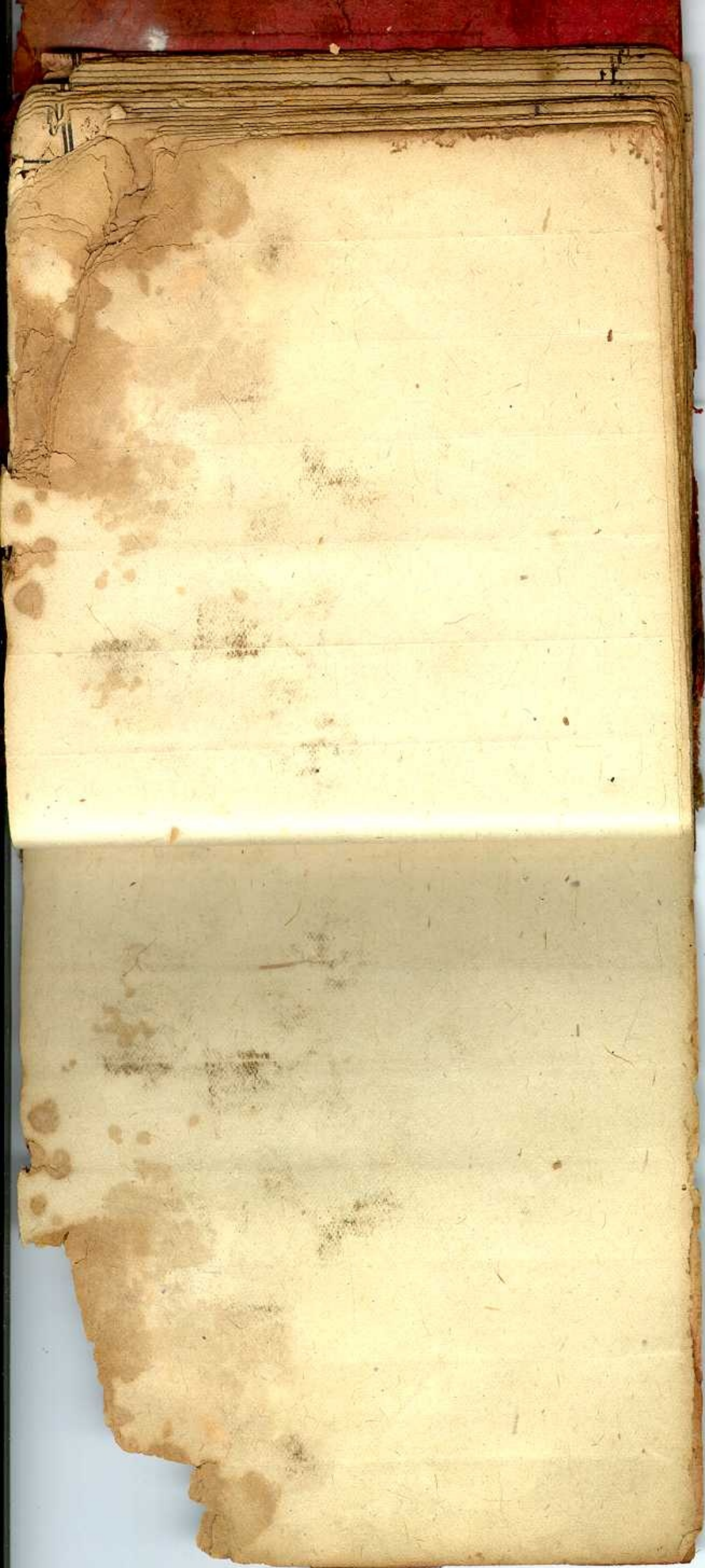


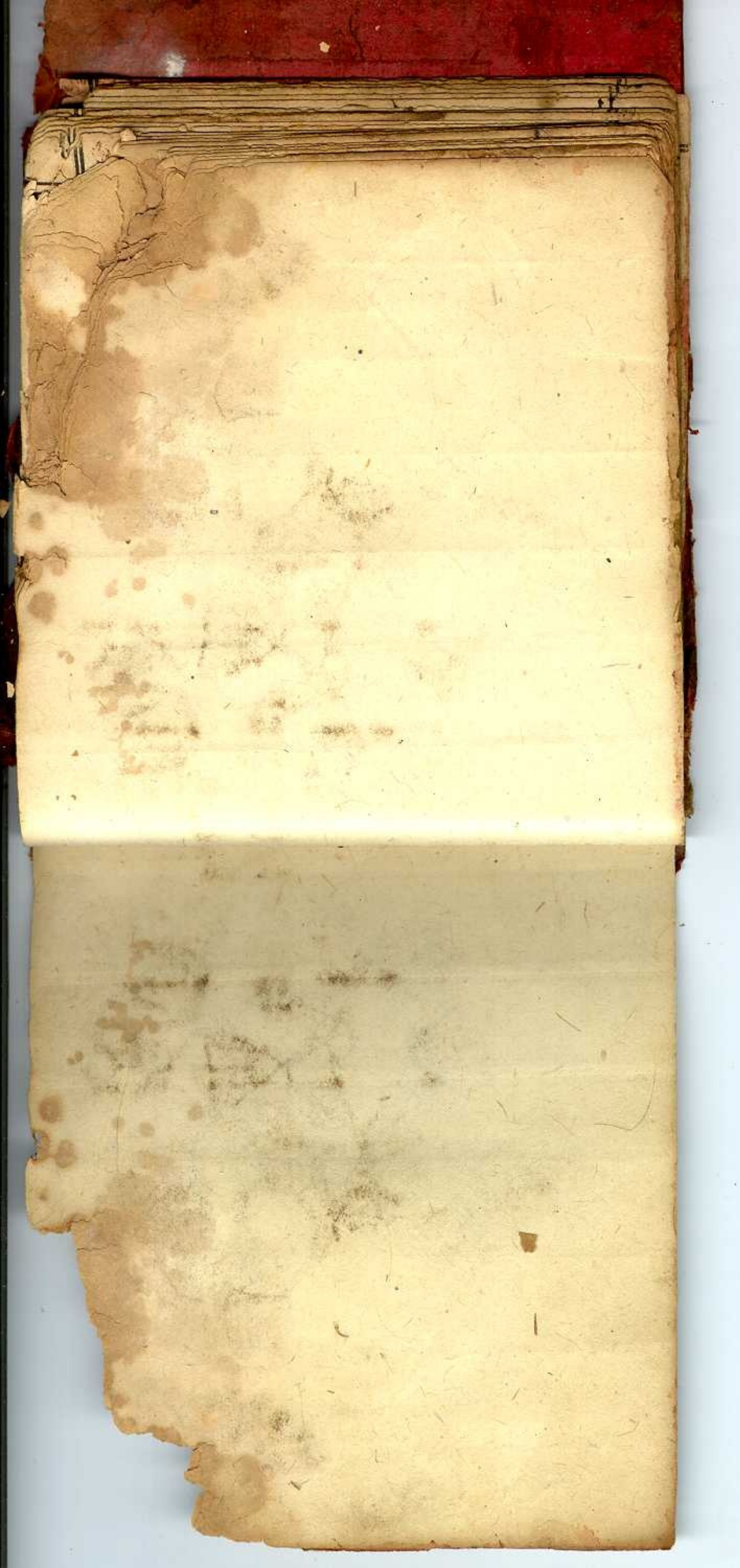


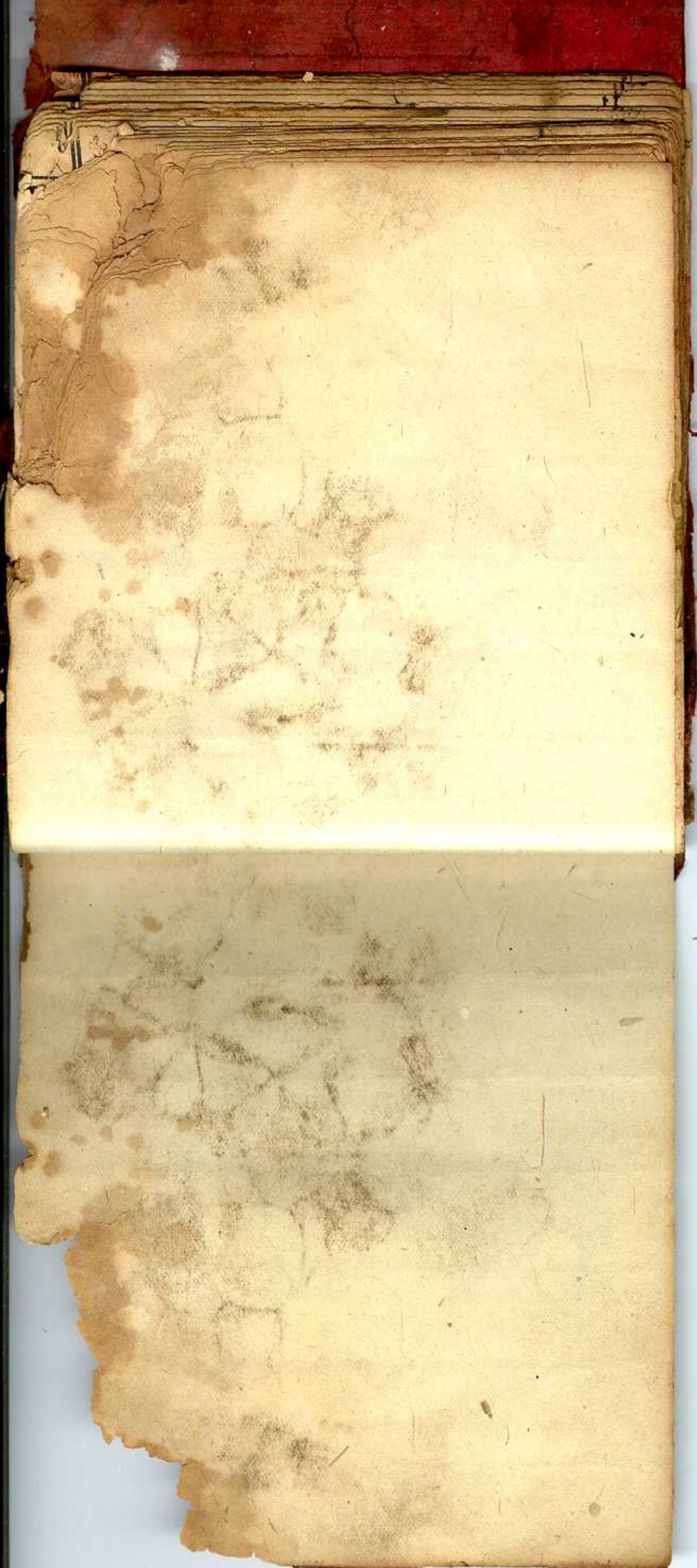












527

गुरुकुल मंडल

257

ASHA ARCHIVES